Class – T.D.C. Part III
Paper – V (धर्म-दर्शन)
(Philosophy of Religion)

डॉ० प्रेम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शन शास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

Topic – आत्मा की अमरता
(Immortality of Soul)

आत्मा की अमरता
(Immortality of Soul)

आत्मा की अमरता के पक्ष में तथा उसके विरुद्ध दी गयी युक्तियाँ
(Arguments for and against the immortality of Soul)

अमरत्व की भावना अत्यन्त प्रिय एवं व्यापक है। प्रत्येक धर्म में किसी-न-किसी रूप में अमरता के विचार पाये जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् जीवन में विश्वास भारतीय मूल के धर्मों तथा पैगम्बरी धर्मों में भी पाया जाता है। पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम जैसे पैगम्बरी धर्मों में मृत्यु के बाद जीवन की व्याख्या भिन्न-भिन्न रूपों में की गयी है। भारतीय मूल के धर्मों (जैसे-हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि) में आत्मा की अमरता को स्वीकार किया गया है। ईश्वरवादी दृष्टिकोण से मानव का ~~अमरत्व~~ स्थायित्व भूत, भविष्य एवं वर्तमान

के काल-चक्रों में बना रहता है। इसलिए आत्मा कालरहित नहीं होती है। धर्म दार्शनिकों की दृष्टि से आत्मा की अमरता के सन्दर्भ में कई महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि मृत्यु के बाद जीवन या पुनर्जन्म में विश्वास रखने का कोई ठोस तार्किक आधार है या नहीं। ये सभी विश्वास तथ्यमूलक हैं जिनकी जाँच वैज्ञानिक विधि से की जानी चाहिए।

हिन्दू धर्म में आत्मा की अमरता की व्याख्या विभिन्न सम्प्रदायों में अलग-अलग है। श्रीमद्भगवद्-गीता के अनुसार आत्मा नित्य एवं अविनाशी है जो मृत्यु के उपरान्त वस्त्र-परिधान की तरह शरीर का त्याग कर नवीन वस्त्र के समान नये शरीर को धारण करती है। अद्वैत मत में शंकर ने 'ब्रह्म' में लीन होने को मुक्ति कहा है। विशिष्टाद्वैत मत में रामानुज के अनुसार ईश्वर के साथ जुड़ जाना मुक्ति है। जैन धर्म में मुक्ति की अवस्था में आत्मा पुनः 'पूर्णावस्था' को प्राप्त करती है। बौद्ध धर्म में आत्म-तत्व को स्वीकार करते हुए उसकी अन्तिम गति के अनेक रूप बतलाये गये हैं। जैसे- स्वर्ग-प्राप्ति, ईश्वर के साथ निकटता या एकाकार होना आदि। जैन धर्म में आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए भी जीवन एवं पुनर्जन्म को मान्यता प्रदान की गयी है।

पारसी, यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम जैसे पैगम्बरी धर्मों में मृत्यु के बाद जीवन के अस्तित्व में विश्वास किया जाता है, किन्तु पुनर्जन्म को नहीं माना गया है। इन धर्मों में यह माना गया है कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन इस पृथ्वी पर एक बार के लिए ही मिला है और "कयामत के दिन" ये सभी मृत व्यक्ति सशरीर जीवित हो जायेंगे।

उस दिन प्रत्येक मृतक व्यक्ति के कर्मानुसार स्वर्ग या नरक की प्राप्ति होगी, किन्तु पुनः इस जीवन के बाद मृत्यु नहीं होगी।

आत्मा की अमरता के सन्दर्भ में भारतीय एवं पश्चिमी दोनों ही विचारधाराओं में अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। भारतीय दर्शन के 'न्याय' मत में कहा गया है कि आत्मा प्रत्यक्ष के दायरे से परे है क्योंकि यह अनादि है। इसीप्रकार विश्व में दिखलायी पड़नेवाले असमान वितरण के आधार पर आत्मा की अमरता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। जीवन में मिलने वाले सुख-दुःख, सफलता-असफलता आदि सभी एकसमान रूप में प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त नहीं होते हैं। इसकी प्राप्ति कर्मानुसार होती है जो मृत एवं भविष्य जीवन का संकेत देती है। इससे सिद्ध होता है कि आत्मा अमर है। इसके अतिरिक्त, नवजात बच्चे के मुख पर उभरने वाली विभिन्न प्रकार की आकृतियों के माध्यम से भी न्याय दर्शन में आत्मा की अमरता को सिद्ध किया गया है। इसके समर्थन में नैयायिकों का कहना है कि पूर्व जन्म के सुख या दुःख की अनुभूति स्मृति के रूप में नवजात बच्चों में होती है। यह जीवन की निरन्तरता का सूचक है।

कर्म-सिद्धान्त से भी आत्मा की अमरता सिद्ध होती है। बुरे कर्म का परिणाम बुरा तथा अच्छे कर्म का परिणाम अच्छा होता है यह केवल वर्तमान जीवन के सीमित काल में सम्भव नहीं है। अतीत, भविष्य एवं वर्तमान — तीनों काल की शृंखला में बँधकर ये परिणाम जीवन में मिलते हैं। इस आधार पर नैतिक दृष्टि से आत्मा की अमरता प्रमाणित होती है।

आधुनिक युग में परामनोविज्ञान के द्वारा आत्मा की अमरता एवं पुनर्जन्म को प्रमाणित करने की दिशा

में महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। लंदन में स्थापित "Society for Psychical Research" में मृत्यु के बाद जीवन एवं पुनर्जन्म के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है। इसीप्रकार डॉ० स्टेवेन्सन की पुस्तक 'Twenty Cases of the incarnation' में वैज्ञानिक ढंग से पुनर्जन्म को प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है। इससे अमरता के विचार को बल मिलता है।

किन्तु परोमनोविज्ञान के इन शोधों के आधार पर मृत्यु के बाद जीवन या पुनर्जन्म के सम्बन्ध में कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला है।

पश्चिमी विचारधारा में भी आत्मा के अमरत्व के विषय में अनेक तर्क प्रस्तुत किये गये हैं। प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक प्लेटो का कहना है कि आत्मा सरल द्रव्य (Simple Substance) है। यह निरवयव (Partless) है जो मृत्यु एवं विनाश से रहित स्थायी है। नाश या मृत्यु केवल जटिल (Composite) वस्तुओं की होती है क्योंकि इन्हें अलग-अलग भागों में विभक्त किया जा सकता है। सरल एवं निरवयव द्रव्य आत्मा को नष्ट नहीं किया जा सकता। प्लेटो की इस युक्ति को अक्वाइनस एवं रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा अपनाया गया है। प्लेटो ने शरीर एवं आत्मा के द्विविभाजन के आधार पर भी आत्मा के अमरत्व को सिद्ध करने का प्रयास किया है। शरीर परिवर्तनशील एवं नश्वर है जो भौतिक विश्व से जुड़ा है, किन्तु आत्मा अनश्वर एवं स्थायी है जो नित्य एवं आध्यात्मिक विश्व से सम्बद्ध है। इसका ज्ञान बुद्धि या प्रज्ञा द्वारा होता है। प्लेटो द्वारा बतलाये गये शरीर एवं आत्मा के इस द्विविभाजन को ईसाई-चर्च ने भी अपनाया है।

आधुनिक युग में फ्रेंच दार्शनिक देकार्त ने शरीर एवं आत्मा के बीच अन्तर बतलाया है।

(क्रमशः)